RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियाँ : एक अध्ययन

संतोष कुमारी

शोधार्थी हिंदी विभाग महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

आज नारी को लेकर सरकार और समाज दोनों ही चिन्तित है। नारी चेतना से संपन्न हिन्दी कहानियॉ लिखी जा रही हैं। जिसमें नारी की आत्मा स्व और अहं ध्वनित है। वास्तव में चेतना का अर्थ विचारों अनुभूतियों संकल्पों की आनुषांगिक दशा स्थिति अथवा क्षमता से है। उसका संबंध नारी की स्वयं की पहचान या किसी भी स्तर पर विषयगत अनुभवों के संगठित स्वरूप से होता है। नारी विमर्श और चेतना के विकास का ही परिणाम है कि नारी आज सामाजिक राजनीतिक आर्थिक व्यावसायिक और वैज्ञानिक क्षेत्र में पुरुष के समान ही नहीं बल्कि पुरुष से आगे बढकर अपनी निःशंक सेवाएं दे रही हैं। नारी चेतना का ही चरम है जहाँ वह यह कहती है. मैं उन औरतों में नहीं हूँ जो अपने व्यक्तित्व का बलिदान करती है जिनकी कोई मर्यादा और शील नहीं होता है। मैं न उनमें हूँ जिनके चरित्र पर पुरुष की हवा लगते ही खराब हो जाते हैं और न पति की गुलामी को सच्चरित्रा का प्रमाण मानती हैं। मुझमें आत्मनिर्भरता भी है और आत्मविश्वास भी। मुझे स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता है तो पति और परिवार के साथ सामंजस्य बनाने की शक्ति भी। अतः जीवन के यथार्थ को स्वीकार करने में कोई झिझक भी नहीं है।सुभद्रा कुमारी चौहान भी ऐसी ही कहानीकार है जो नारी में चेतना भरने में कोई कमी नही छोडती। इनकी कहानियों के पात्रों में नारी–भाव के विविध रूपों को उजागर किया गया है। वैसे तो हम सबबचपन से सुभद्रा कुमारी का नाम झांसी की रानी की कविता से जोड़ कर सुनते आ रहे है। इनका जन्म16 अगस्त 1904 ई0 में इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ। ये राष्ट्रीय सजग लेखिका एवं कवयित्री के रूप में जानी जाती है। केवल लेखिका ही नहीं आंदोलन से भागी दारी इनकी जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ है''[1] बहुत सारे साहित्य विद्यार्थी इस बात से परिचित नहीं हैं कि सुभद्रा कुमारी ने गद्य साहित्य पर भी लेखनी चलाई है। 'बिखरे मोती'जो 1932 में उनका पहला कहानी संग्रह था। इसमें 25 कहानियाँ थी, इनमें होली, पापी पटे,मझली रानी, परिवर्तन, दृष्टिकोण, कदम के फूल आदि महत्वपूर्ण कहानियाँ थी। 'उन्मादिनी'1943 इनका दूसरा कहानी संग्रह है। इसमें 9 कहानियाँ हैं। यह अपेक्षाकृत छोटा कहानी संग्रह है। 'सीधे–सादे चित्र'1947 सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा कहानी संग्रह है। इसमें कुल 24 कहानियाँ हैं। ''अतः सुभद्रा कुमारी चौहान व्यापक कथा दृष्टिवाली कहानीकार है।''[2] वह नारी प्रधान पारिवारिक सामाजिक समस्याओं को अपनी कहानी की कथा वस्तु बनाती हुई उद्देश्य की ओर चलती है। ''बीसवी सदी के हिन्दी लेखन में सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम तटस्थ भाव से लिया जाता है।''[3]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में वैयक्तिकता और सामाजिकता के अंतःसंघर्ष के कारण इच्छाओं और परिस्थितियों का प्रभाव व्यक्तित्व, नैतिकता, वैचारिकता पर पडता है। नारी सम्मान और पारस्परिक संबंधों के जटिल अंतर्विरोध प्रेम के अंतरंग स्वरूप तथा नारी.महत्त्वाकाक्षाओं ने नारी चरित्र में दोहरे व्यक्तित्व का निरूपण करने के लिए कहानीकार नेचित्रण किया है। मध्यवर्गीय नारी चरित्र एक प्रकार से अंतर्मुखी चेतना का विकास द्रष्टव्य होता है। इनमें अतिशिक्षित एवं बौद्धिक होती नारी अपने सम्मान के प्रति अधिक सजग हो उठी है। परिणामतः समाज में पारस्परिक संबंधों में अंतर्विरोध की स्थितियाँ बढ गई है। यही नही; बढती हुई नारी चरित्रों की अंतर्मुखता समाज विरोधी है। समाज एवं सामाजिकता को गौण करते हुए व्यक्ति की अधिक प्रतिष्ठा चित्रित की गई है।यदि कहा जाए कि इतिहास की तुलना में काव्य साहित्य के माध्यम से कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने झांसी की रानी लक्ष्मी बाई को अमर किया है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यह सत्य है कि ''स्वाधीनता सग्राम मैं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र संघर्षधर्मी रहा है।''[4] परन्तु लोक मानस पर इस चरित्र का खाका चित्रित करने में सुभद्रा कुमारी चौहान का बड़ा योगदान रहा है। आज बच्चा–बच्चा 'खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी' के गीत को गुनगुनाता दृष्टिगोचर होता है। यह भी एक कारण रहा किइस कविता की लोकप्रियता के चलते हम सुभद्रा कुमारी चौहान के कथा–साहित्य की ओर ध्यान ही नही दे पाएं।

सुभद्रा कुमारी चौहान का उद्देश्यमूलक लेखन जग जाहिर है। परन्तु 1948 की कार दुर्घटना ने उनके इस लेखन का अध्याय समाप्त कर दिया। कहना संगत होगा यह कार दुर्घटना हिन्दी साहित्य जगत के लिए बहुत ही बुरी घटना थी जिसने हिन्दी साहित्य की सामाजिक उन्नति को रोक दी।यह एक ऐसा व्यक्तित्व था जो जीवन को नकारने वाला नहीं जीवन को स्वीकारने वाला था। कहानी साहित्य में इसी स्वीकृति का चित्रण है।नारी के आत्म.बोध आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की कहानियों में जो नारी

चरित्र उभरकर आए हैं उन्हें सुभद्रा कुमारी की कहानियों में देखा जा सकता है। नारी इनमें से किसी भी समाज में हो वह अपनी पहचान बनाती है। वह विद्रोह और रुढियों को चुनौती देती हुई महत्त्वाकांक्षिणी के रूप में चित्रित है। नारी दोहरे मानदंडों से जूझते हुए झूठी इज्जत के कारण अनेक कष्ट भोगने के लिए बाध्य है। यद्यपि वह शिक्षित है परंतु समाज की झूठी रूढियों में फँसकर अपनी बौद्विकता से दूर रहकर समाज के अनुरूप खुद को ढालने के लिए विवश है। नारी चरित्र आज सर्वाधिक सशक्त है। वह विद्रोह और रूढियो को खुलकर चुनौती दे रही है तथा समाज के बंधनों और मर्यादा की परवाह न करके अपनी आत्मा और स्वाभिमान की रक्षा करती है।समाज और समायोजन सुभद्रा कुमारी चौहान के हृदय का गहना था जिससे उन्होंने अपनी कहानियों के कथ्य को सजाया है। उनके पास शिल्प सौष्ठव नहीं, केवल सादगी और सामाजिक सजगता है। सब कुछ लोक मानस के बहुत करीब देश अभिमान, साहस, त्याग एवं बलिदान है। गजानन माधव मुक्ति बोध के शब्दों में, ''सुभद्रा जी का साहित्य राष्ट्रीयता में बेजोड़ है। इसमें सामाजिक आदर्थ का जीवन समाया हुआ है। वह नारी रूप में रहकर साधारण नारियों की आकांक्षाओं और भावों को सहज ही व्यक्त कर देती है।''[5] सम्भवतः उसमें नारी सुलभ गुणों का उत्कर्ष है। सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन सक्रिय राजनीति में बीता, वे शहर की सबसे पुरानी कार्यकर्त्ता थी। उनका यह कार्यकर्त्ता पन कथा साहित्य में आ गया। इसका कारण यह भी था कि उन्हें वृहत्तर नारी जाति का विश्वास प्राप्त था उनका कथा साहित्य और उनका पांच विधान इसी बात का आधार है। यह पात्र योजना उस समय और आज का समय दोनों के लिए विलक्षण खुलापन है। यहां नैतिकता के और मर्यादा के दोनों बिन्दुओं को लेखिका ने बराबर ध्यान में रखा है। वे सदैव साहसिक एवम् ईमानदार रही है।''जिस तरह राजनैतिक दृष्टिकोण और परिवर्तन के प्रश्न को सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने कथा साहित्य में प्रस्तुत किया है; उस तरह शायद ही किसी समकालीन लेखक ने प्रस्तुत किया हो। [6] ये चौंकाने वाली स्थिति एक समाजवादी चेतना से लैस नजर आती है। और यह मानती प्रतीत होती है। लेखन की पुरी ताकत एवं तीव्रता से मानव मुक्ति जैसी विषयावली पर केन्द्रित होना चाहिए। यथा, ''एक दिन की बात है, मैं वैसे ही ब्याह कर आई थी जैसे शहर की लड़की, वहां तो नलो से काम चलता, भला कुएं से पानी भरना मैं क्या जानती ? मेरी सांस मुझे कुएं से पानी भरना सीखा रही थी।''[7]इस कथन से लेखिका समाज सास एवम् बहू दोनों का चरित्र निर्धारित करती नजर आ रही है। इस उदाहरण का अर्थ लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान के लेखन को समीक्षात्मक आयाम देता है। यहीं पर उच्च मध्यवर्गीय चरित्र भी उभरता है। शिक्षित नारी चरित्र समाज और स्वयं के व्यवहार के बीच कहीं खाई पाटता है तो कहीं अहम् की तीव्रता के कारण अपने पारिवारिक संदर्भों और मूल्यों को विघटित करता है। यद्यपि यह चरित्र आर्थिक स्तर पर सुदृढ स्थिति में है और रोजी.रोटी की समस्याएं इन्हें नहीं घेरती हैं। कहानीकार काकथा रचना की प्रक्रिया को भीतर तक उतरने की प्रक्रिया को बताना है। यहां संस्कृति की पराकाष्ठा को उजागर करना है। अपनी एक कहानी में लेखिका लिखती, ''विवाह के बाद नवबधु को लेकर जब वैरिस्टर साधारमण घर लौट रहे थे तब रास्ते में रेल दुर्घटना हो गई। सभी बाराती घायल हो गए। एक दो का तो घटनास्थल पर ही अंत हो गया। मरने वालों में स्वयं राधारमण भी था। मरने से पूर्व राधारमण ने आँखे खोलकर अपने चारों ओर देखा और अपने मित्र को कल्याणी सौप दी।'' [8] यह लेखिका का इतिहास के विशेष बिंदु से नहीं ; समाज के विशेष बिंदु से नहीं, संवेदना के विशेष बिंदु से उपजा भाव है। उपर कई बार समाज का प्रयोग किया गया उसका अर्थ यह नहीं लगाना चाहिए कि लेखिका समाज शास्त्री रही है। असल उनका कथा साहित्य समाजपने से सराबोर है। इसका दूसरा कारण यह भी है कि भावना और विवेक दोनों का समन्वय इनके लेखन में पग–पग नजर आता है। इसलिए इनका साहित्य विशेष रूप से कथा साहित्य को सामाजिक आदर्श का साहित्य कहा जाता है। उनका कथा साहित्य का पठन इस बात का आभास सहज ही करा देता है कि नैतिकता और भारतीय मूल्यपरक साहित्य सृजका है। नारी हृदय का समर्पण गजब है। उदाहरण प्रस्तुत है, ''मेरे देवता, मुझे मालूम है कि आप मुझसे नाराज है, घोड़ा भी नहीं बहुत अधिक। इसीलिए तो दो अक्षर कुशल समाचार देना भी उचित नहीं समझने आपकी इस नाराजगी का कारण भी मुझसे छिपा नहीं है। मैं यह , केवल मैं ही जानती हूँ कि किन परिस्थितियों में पड़कर आपकी आज्ञा का उल्लंग्न कर रही हूँ। यदि आप मेरे स्थान पर होते तो वही करते जो मैं कर रही हूँ। अंत में यही निवेदन कर रही हूँ कि मुझसे नाराज ना हों, अपने कुशल समाचार का पत्र भेजकर अनुगृहित करें । आपकी प्रेमिला।''[9]

समाज में आदर्श एवं यथार्थ दोनों की अपनी विशेषताएं हैं और उनके बीच ही विसंगतियों का विकास होता है। सामाजिक आदर्श की अपेक्षा यथार्थ की ओर व्यक्ति का झुकाव होता है और वह परंपरागत रूढयों एवं मान्यताओं को तोडने को कटिबद्ध होता है। समकालिन कहानियों में के नारी चरित्रों में एक संघर्षात्मक स्थिति का चित्रण सुभद्रा कुमारी ने किया है। इन्हें उच्चमध्यवर्गीय नारी चरित्रों के रूप में देखा जा सकता है। ये नारी चरित्र शिक्षित योग्य एवं विकास की संभावनाएं लिए हैं तथा घर और बाहर दोनों को संभाल रखे हैं। पद पाकर भी अपने परिवार के प्रति उनमें सजगता है तो अपने केरियर के प्रति भी और कर्त्तव्य के प्रति भी। सुभद्रा जी की कहानियों स्त्री हृदय से लिखती है मनोविज्ञानी बनकर नहीं लिखती । उनकी कहानियों के पात्र चाहे स्त्री चाहे पुरूष, चाहे दलित चाहे स्वर्ण, चाहे पढ़े लिखे चाहे स्वर्ण। सब के सब परतंत्रता नही स्वअनुशासन चाहते हैं। प्रत्येक चरित्र का

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मानसिक पटल एक ही बात की ओर संकेत करता है किवह रूढ़ियों बंधनों से मुक्त होकर स्वनियंत्रण की राह पर चलने को अग्रसर रहे। दृष्टिकोण की निर्मला में हमें सुभद्रा के साक्षात् दर्शन होते है जो आज हमारे लिए आदर्श है।यह निश्चित है बीसवीं सदी में लिखी गई कहानियों निश्चित रूप से समाज के लिए नारीवाद से हटकर हैं। तथाकथित विचारक अपनी संकीर्ण दृष्टि को थोपते हुए देर नहीं लगाते, क्योंकि वे पूर्वधारणा से ग्रस्त ह्रदय होने के साथ–साथ उनके मन में सामाजिक रूढ़ियों और विसंगतियों को लेकर क्षोभ है। वह मानवीय सरोकार की कथाकारा है। शायद ही इस सदी की यह महत्वपूर्ण कथाकारा है। परमात्मा ने स्त्री जाति के ह्रदय में इतना विश्वास, इतनी कोमलता, इतना प्रेम शायद इसलिए भर दिया है कि वह पग–पग पर ठुकराई जाए। जिस देवता के चरणों में वह समर्पित है, वही उसके लिए सब कुछ है। यह स्वयं लेखिका का कथन जो सर्व़त्र नारी जाति, विशेष तौर से भारतीय नारी जाति का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय नारी का कोई विकल्प नहीं है। उन्मादिनी कहानी का उदाहरण स्पष्ट है। '' लोग मुझे उन्मादिनी कहते है, क्यों कहते हैं, यह तो कहने वाले ही जाने, किन्तु आज तक मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया जिसमें उन्माद के लक्षण हों। मैं अपने सभी काम नियम पूर्वक करती हूं, क्या एक भी दिन मैं उस समाथि पर फूल चढ़ाना भूली हूँ? क्या कोई ऐसी संध्या गुजरी है जहाँ मैंने दीपक नहीं जलाया हो, कौन सा ऐसा संवेरा हुआ है, जब ओस से धुली नई–नई कलियों से मैंने समाधि को ढक दिया हो , फिर भी मैं उन्मादिनी, यदि अपने –अपने किसी आत्मीय सच्चे प्रेम को उन्माद कहते हैं तो ईश्वर यह उन्माद सभी को दे।''[10]यह चित्रण हिन्दी साहित्य की वह अनमोल निधि है जिसके लिए आने वाली पीढ़िया श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की सदैव ऋणी रहेंगी।आधुनिक हिन्दी कहानियों में पारंपरिक आदर्शवादी और यथार्थवादी नारी चरित्रों का अभाव नहीं है। ऐसे पात्र पारंपरिक आदर्शवादिता और यथार्थ को एक साथ जीते हैं। पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति तथा वैज्ञानिकता और शिक्षा प्रसार के कारण सामाजिक बंधनों की शिथिलता और स्वतंत्र चिंतन ने मानव व्यक्तित्व में परिवर्तन भी दर्शाया है तथा आदमी का अहम् भी व्यापक हुआ है। परिणामतः नारी की अहंता बढती दिखाई देती है इसलिए इन नारी चरित्रों में नौकरी की ललकए वैवाहिक संबंधों की शिथिलता पारिवारिक विघटन का उल्लेख समाहित हो गया है।चलते–चलते भाषा की बात की जाए तो कोई समय ही नहीं बचता कि श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा सामाजिक सरोकार की भाषा है। सरल–सहज शब्दावली। बिना बनावटी पन के, प्रवाहमयता के साथ कथ्य हो व्यक्त करते संपाद निश्चित रूप से प्रौढ़ लेखन के प्रतीक हैं। कुल मिलाकर श्री मती सुभद्रा कुमारी चौहान का कथा साहित्य भाव एवं शिल्प दोनों दृष्टियों से अद्भुत है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी कथाकारा, सुनीता कुमारी पृष्ठ 27
2. वही
3. वही
4. स्वतंत्रता संग्राम, प्रो. यषवीर पृष्ठ 72
5. सुभद्रा के लिए, गजानन माधव मुक्तिबोध, हंस 1942
6. प्रतिनिधि कहानियाँ, बुद्ध प्रकाश पृष्ठ 17
7. तारा, सुभद्रा कुमारी चौहान पृष्ठ 3
8. उन्मादिनी, सुभद्रा कुमारी चौहान पृष्ठ 4
9. नारी ह्रदय, सुभद्रा कुमारी चौहान पृष्ठ 16
10. उन्मादिनी, सुभद्रा कुमारी चौहान पृष्ठ 23
11. संतोष कुमारी सुपुत्री श्री रामकुमार